पंजीकरण सं. आर.एन. 40596/83 डाक पंजी. संख्या-जी-3-डी.एल. (एन.)/084/2015-17 प्रकाशित: 01.04.2015 इस अंक का मूल्य 2 रुपये

॥ ओ३म् ॥

# युवा उद्घोष

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् (पंजीकृत) का पाक्षिक शंखनाद

Join—http://www.facebook.com/groups/aryayouth/

कार्यालय : आर्य समाज कबीर बस्ती, दिल्ली-*110007*, चलभाष : 9810117464, 9868051444

**दिल्ली के आर्यो 16 अप्रैल को प्रात: 9 बजे आर्य संन्यासियों का अभिनन्दन करने झिलमिल मैट्रो स्टेशन पंहुचे-अनिल आर्य**

वर्ष-31 अंक-21 चैत्र-2072 दयानन्दाब्द 191 01 अप्रैल से 15 अप्रैल 2015 (प्रथम अंक) कुल पृष्ठ 4 वार्षिक शुल्क 48 रु.
प्रकाशित: 01.04.2015, E-mail : aryayouthn@gmail.com aryayouthgroup@yahoogroups.com Website : www.aryayuvakparishad.com

## केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् नई दिल्ली के तत्वावधान में जन्तर मन्तर पर शहीद भगतसिंह, राजगुरू, सुखदेव के 84 वें बलिदान दिवस पर राष्ट्र रक्षा यज्ञ

### जम्मु कश्मीर में धारा 370 समाप्त की जाये– आर्य नेता डा.अनिल आर्य

सम्बोधित करते नरेन्द्र आर्य 'सुमन', मंच पर आचार्य शिवराज शास्त्री, आचार्य प्रेमपाल शास्त्री, डा.अनिल आर्य, धरने के अध्यक्ष श्री मायाप्रकाश त्यागी, आर्य तपस्वी सुखदेव व गवेन्द्र शास्त्री व राष्ट्र रक्षा यज्ञ का द्रश्य।

नई दिल्ली। सोमवार, 23 मार्च 2015, केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् नई दिल्ली के तत्वावधान में ''जन्तर मन्तर'' पर अमर शहीद भगतसिंह,राजगुरू,सुखदेव के 84 वें बलिदान दिवस पर परिषद् के राष्ट्रीय अध्यक्ष डा.अनिल आर्य के नेतृत्व में ''राष्ट्र रक्षा यज्ञ व आंतकवाद विरोधी दिवस'' का आयोजन कर स्वतन्त्रता सग्रांम के महान शहीदों को श्रद्धांजलि अर्पित की गई। इस अवसर पर हजारों आर्य समाजियों ने पहुँच कर देश की एकता व अखण्डता की रक्षा का संकल्प लिया। यज्ञ के ब्रह्मा आचार्य शिवराज शास्त्री ने ''राष्ट्र की रक्षा'' के लिये आहुतियां डलवाई । इस अवसर पर नव वर्ष विक्रमी सम्वत् 2072 के अवसर पर शुभकामनायें दी गई ।

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के राष्ट्रीय अध्यक्ष डा.अनिल आर्य ने कहा कि समय की मांग है कि जम्मू कश्मीर से धारा 370 अविलम्ब समाप्त कर उसे देश की मुख्य धारा के साथ जोड़ा जाये तथा वहां पर सेना को पूरी खुली छूट दी जाये जिससे वह आंतकवादियों व उनके सरंक्षकों को सख्ती से कुचले सके, देश की रक्षा की कीमत पर कोई समझौता नहीं हो सकता। उन्होंने इस बात पर रोष जताया की आज भी अनेकों आंतकवादी जेलों में बन्द हैं तथा देश पर बोझ बने हुए हैं उन सब को अविलम्ब फांसी दी जाये। आज देश का करोड़ों रूपया इनकी सुरक्षा पर खर्च हो रहा है। उन्होंने कहा कि आज देश में कहीं पर पाकिस्तान जिन्दाबाद के नारे लगाये जाते है और कहीं तिरंगा जलाया जाता है ऐसे लोगों से सरकार को कठोरता से निपटना चाहिये।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के कोषाध्यक्ष श्री मायाप्रकाश त्यागी ने कहा कि यदि आज भगतसिंह होते तो देश की दुर्दशा देख कर रो पड़ते सोचते कि क्या मैंने इस दिन के लिए जान दी थी। देश की वर्तमान परिस्थितियों में युवा पीढ़ी का दायित्व बढ़ गया है, अब युवकों को जातिवाद, भ्रष्टाचार, क्षेत्रवाद के विरूद्वआगे आना होगा। परिषद् के महामन्त्री श्री महेन्द्र भाई ने शहीदों के जीवन चरित्र को पाठयपुस्तकों में समुचित स्थान देने की मांग की।

आचार्य प्रेमपाल शास्त्री ने कहा कि आजादी केवल चर्खे तकली से नहीं आयी अपितु हजारों जवानों ने अपनी कुर्बानियां दी है। अखण्ड हिन्दुस्तान मोर्चा के अध्यक्ष श्री सन्दीप आहूजा कहा कि देश की आजादी की लड़ाई में जेल जाने वाले 80 प्रतिशत आर्य समाजी थे, आज राष्ट्र धर्म का पालन भी आर्य जनों को करना और करवाना भी होगा।

आर्य नेता वीरेन्द्र विक्रम, गवेन्द्र शास्त्री, कर्नल अजयवीर, संघ्या बजाज, विम्मी अरोड़ा, आर्य तपस्वी सुखदेव जी, विजय कपूर, सरदार हरभजनसिंह, जगदीश मलिक, गायत्री मीना, हरबंसलाल कोहली, नरेन्द्र आर्य सुमन, चतरसिंह नागर, राकेश भटनागर, देवेन्द्र भगत, प्रवीन आर्य, वीरेन्द्र योगाचार्य, जितेन्द्रसिंह आर्य, रविन्द्र मेहता, अनिल हाण्डा, सौरभ गुप्ता, अरूण आर्य, प्रकाशवीर शास्त्री आदि ने भी अपने विचार रखे। प्रधान मन्त्री व केन्द्रीय गृहमन्त्री के नाम ज्ञापन भी दिया गया।

जन्तर मन्तर पर डा.अनिल आर्य के नेतृत्व में मार्च करते आर्य जन व युवा शक्ति उद्घोष करते हुए।

## राष्ट्रीय युवक चरित्र निर्माण शिविर एमेटी में

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् नई दिल्ली के तत्वावधान में डा.अमिता चौहान व डा.अशोक कुमार चौहान के सान्निध्य में ''विशाल आर्य युवक चरित्र निर्माण शिविर'' दिनांक 6 जून से 14 जून 2015 तक ऐमिटी इन्टरनेशनल स्कूल,सैक्टर–44,नोएडा में आयेाजित किया जा रहा है । कक्षा 6 से 12 तक के युवक भाग लें सकेगे । सभी आर्य युवक शनिवार, 6 जून को दोपहर 1.00 बजे तक शिविर स्थल पर पंहुच जायें । शिविर का ''उद्घाटन समारोह'' शनिवार, 6 जून को सायं 5 से 7 बजे तक होगा । इच्छुक सम्पर्क करें–प्रवीन आर्य–9716950820 व शिक्षक सौरभ गुप्ता–9971467978.

निवेदक

**आनन्द चौहान** (संरक्षक) **डा.अनिल आर्य** (शिविर संचालक) **महेन्द्र भाई** (शिविर संयोजक)

# वाल्मीकि के राम और वैदिक धर्म

- मनमोहन कुमार आर्य

सृष्टि के आरम्भ से अब तक संसार के इतिहास में अगणित महापुरूष हुए हैं परन्तु ज्ञात पुरूषों में अयोध्या के राजा दशरथ पुत्र श्री राम चन्द्र जी का स्थान अन्यतम है। इसका प्रमाण वाल्मीकि रामायण एवं विश्व इतिहास में हुए प्रसिद्ध महापुरूषों के जीवन चरित्र हैं। श्री राम चन्द्र जी के जीवन चरित्र लेखक महर्षि वाल्मीकि उनके न तो कृपा पात्र थे और न हि किसी प्रलोभनवश उन्होंने ऐतिहासिक महाकाव्य रामायण की रचना की थी। महर्षि वाल्मीकि साक्षात्कृत–धर्मा आप्तपुरूष थे। उनका कोई भी कथन न तो अतिश्योक्तिपूर्ण है और न अप्रमाणिक, कल्पित व असत्य ही। ऋषि होने के कारण वह वेदों और वेदांगों के भी ज्ञानी थे, धर्म को वह अच्छी तरह से जानते थे और सत्य में ही उनकी निष्ठा व अवलम्बन था। अतः उनकी लेखनी से लिखा गया रामायण विश्व साहित्य का अद्वितीय ग्रन्थ है, इसलिए कि यह संसार के सर्वश्रेष्ठ मर्यादापुरूषोत्तम मनुष्य का जीवन चरित्र होने के साथ विश्व साहित्य में साहित्यिक गुणों से भरपूर एवं महानतम है। इसका एक कारण इसका विश्व की प्राचीनतम भाषा में होना, दूसरा कि महाकाव्य होना और तीसरा एक ऐसे चरित्र से संसार के लोगों का परिचय कराना जो धर्म का साक्षात रूप रहा हो। भारत को यह गौरव प्राप्त है कि उसके पास एक ऐसे मनुष्य का चरित्र है जिसके समान विश्व साहित्य में दूसरा चरित्र नहीं है।

श्री राम चन्द्र जी आदर्श ईश्वरभक्त, वेदभक्त, ऋषि परम्पराओं के अनुगामी, आदर्श पुत्र, आदर्श पति, आदर्श भाई, विमाताओं का भी समान आदर करने वाले, आदर्श राजा, आदर्श मित्र और आदर्श शत्रु भी थे। वह सृष्टि के आदि में आरम्भ वैदिक धर्म को साक्षात धारण किये हुए महामानव थे। वैदिक धर्म के अनुरूप यदि किसी आदर्श व्यक्ति का उदाहरण देना हो तो मुख्यतः तीन प्रमुख नाम हमारे सम्मुख आते हैं जिनमें पहला मर्यादा पुरूषोत्तम श्री रामचन्द्र जी का है। अन्य दो नामों में योगेश्वर श्री कृष्ण व तीसरा नाम महर्षि दयानन्द का है। दुर्भाग्य है कि आज का आधुनिक संसार मत मतान्तरों में बंटा हुआ है। मत–मतान्तरों की सबसे बड़ी कमी यह है कि यह अपने मत के ही व्यक्तियों को अच्छा मानते हैं व दूसरे मत के महान पुरूषों को भी यथोचित आदर नहीं देते। संसार के सभी मत व मजहब इतिहास के उस काल में उत्पन्न हुए जब संसार में घोर अज्ञान व अन्धविश्वास छाया हुआ था। इनका प्रभाव सभी मतों पर समान रूप से देखा जा सकता है। समय बदल गया परन्तु इन मतों के अज्ञान व अन्धविश्वास व सृष्टिक्रम के विपरीत धारणायें व मान्यतायें ज्यों की त्यों बनीं हुई हैं। इनमें जो ज्ञान वृद्धि व वेदों के प्रकाश में संशोधन अपेक्षित थे व हैं, वह न तो किये गये और न किये जाने की किसी में मंशा ही हैं। सभी मतों के लोग अपने मतों को पूर्णतः सत्य पर आधारित होने का ख्याल पाले हुए हैं। हम यह प्रस्ताव करते हैं कि यदि वह ऐसा मानते हैं तो फिर वह वेदाध्ययन कर वैदिक मान्यताओं की या तो कमियां बतायें अन्यथा वेदों को स्वीकार करें। वह यह दोनों ही कार्य नहीं करते वा करेंगे। इससे अनुमान लगाया जा सकता है कि मत–पन्थों का आधार सत्य पर है अथवा नहीं। इसके विपरीत महर्षि दयानन्द ने अपनी सभी मान्यताओं का आधार वेद और वैदिक साहित्य को बनाया और चुनौती दी कि या तो इन्हें स्वीकार करें या इनका खण्डन करें। महर्षि दयानन्द ने यह चुनौती वर्ष 1869 से आरम्भ कर अपने जीवन के सूर्यास्त 30 अक्तूबर, सन् 1883 तक जारी रखी परन्तु कहीं कोई वेदविरूद्ध मान्यता को सत्य सिद्ध नहीं कर सका और न ही वेदों की किसी बात को असत्य सिद्ध कर पाया। इससे क्या सिद्ध होता है कि वेद ही ईश्वरीय ज्ञान होने के कारण 100 प्रतिशत सत्य धार्मिक व सामाजिक ज्ञान का ग्रन्थ होने के साथ विज्ञान का भी आधार है। संसार के सभी मनुष्यों को वेद को अपने शाश्वत् पिता–माता ईश्वर की वसीयत व विरासत समझ कर ग्रहण व धारण करना चाहिये और आचरण में लाना चाहिये, इसी में सबका कल्याण है।

हमारे बहुत से बन्धु श्री राम चन्द्र जी को ईश्वर का अवतार मानते हैं। अवतार अर्थात् अवतरण किसी के ऊंचे स्थान से नीचे आने को कहते हैं। ईश्वर अनादि सत्ता होने के साथ सर्वव्यापक, निराकार, अजन्मा, सर्वान्तरयामी है। वह जीवात्माओं को उनके कर्मानुसार जन्म–मरण के चक्र में चलाता है। जन्म लेने वाली प्रत्येक सत्ता जीवात्मा होती है जिसका जन्म अपने पूर्व जन्मों के कर्मों के फलों को भोगने व नये अच्छे कर्मों को करने के लिए होता है। इसी प्रकार से हमारे देश के सभी ऋषि–मुनि व महापुरूषों के जन्म अपने पूर्व जन्मों के पाप–पुण्यों को भोगने के लिए ही हुए थे जिनमें से श्री रामचन्द्र जी भी एक थे। यही बात वाल्मीकि रामायण के अध्ययन से भी सिद्ध होती है। इसमें तो कोई सन्देह ही नहीं कि श्री राम चन्द्र जी वेदों में ईश्वर द्वारा प्रेरित सभी मानवीय गुणों के सागर व साक्षात रूप थे परन्तु वह इस सृष्टि वा ब्रह्माण्ड को बनाने व चलाने वालें नहीं थे। यदि होते तो रावण आदि के वध के लिए उन्होंने जो किया उसकी आवश्यकता न होती। इसका कारण है कि जो सत्ता इस ब्रह्माण्ड को बनाकर अनन्त काल से चला रही है उसके लिए रावण जैसे ज्ञान व शक्ति सम्पन्न असुर प्रवृत्ति के मनुष्य का प्राणहरण करना साधारण है। हम तो यह कहेंगे कि श्रीरामचन्द्र जी ने रावण को अपने पौरूष और शस्त्रों से पराभूत किया परन्तु रावण का प्राणहरण व उसकी जीवात्मा का शरीर से विच्छेदन तथा उसके पाप–पुण्य के अनुसार उसे नया जन्म देने का कार्य उस समय, उससे पूर्व व बाद में सर्व व्यापक परमेश्वर ने ही किया था व करता आ रहा है। उसके बाद अपने शेष जीवन में श्री राम चन्द्र जी ने मृत रावण की कोई चर्चा नहीं की। यदि वह जानते तो बताते कि रावण की मृत्यु के बाद उसकी क्या गति हुई। उसको उन्होंने किसी योनि में किस प्रकार का जन्म दिया।

इस सम्बन्ध में कुछ विस्तार से जानने के लिए हम आर्य जगत के विद्वान स्वामी जगदीश्वरानन्द सरस्वती जी के विचार कि क्या श्रीराम ईश्वर थे?, प्रस्तुत कर रहे हैं। स्वामीजी ने लिखा है कि ''वेद में ईश्वर को अजन्मा, अशरीरी और नस–नाड़ी के बन्धन से रहित कहा गया है। उपनिषदों में भी ईश्वर को निराकार ही चित्रित किया गया है। जो सर्वव्यापक और सर्वदेशी है उसका अवतार कैसा? मर्यादापुरूषोत्तम राम न ईश्वर थे न ईश्वर के अवतार। हम यहां कुछ प्रमाण प्रस्तुत करते हैं। रामायण के आरम्भ में ही जब महर्षि वाल्मिकि ने नारद से पूछा कि इस समय संसार में धर्मात्मा, चरित्रवान् एवं प्रियदर्शन कौन है? तब उन्होंने मनुष्यों में ऐसे श्रेष्ठ व्यक्ति के सम्बन्ध में पूछा था–'महर्षे त्वं समर्थोऽसि ज्ञातुमेवं विधं नरम्? अर्थात् महर्षे ! आप ऐसे मनुष्य को जानने में समर्थ हैं?' इससे यह स्पष्ट है कि महर्षि वाल्मीकि ने अपना काव्य एक महापुरूष के सम्बन्ध में लिखा है, ईश्वर के सम्बन्ध में नहीं। श्री राम स्वयं भी अपने को ईश्वर का अवतार नहीं मानते थे, देखिये––जब भरत श्री राम को लौटाने के लिए चित्रकूट में गये तब श्रीराम ने लौटने से इन्कार करते हुए उत्तर दिया–– 'नात्मनः कामकारोऽस्ति पुरूषोऽयमनीश्वरः। अयो0 105ध्15' अर्थात् हे भरत ! मनुष्य अपनी इच्छा से कुछ नहीं कर सकता क्योंकि मनुष्य ईश्वर नहीं है।

सीताजी को रावण के बन्धन से मुक्त कर उन्होंने कहा––'दैवसम्पादितो दोषो मानुषेणा मया जितः। – युद्ध. 118ध्6 अर्थात् हे देवि ! तुझ पर जो दैवी विपत्ति आई थी उस पर मुझ मनुष्य ने विजय प्राप्त कर ली है।'यहां राम ने अपने को मनुष्य कहा है। एक बार जब लोकपालों ने श्रीराम को ईश्वर का अवतार बताया तो उन्होंने कहा––'आत्मनं मानुषं मन्ये राम दशरथात्मजम्। युद्ध. 110ध्11 अर्थात् मैं तो अपने को महाराज दशरथ का पुत्र एक मनुष्य ही मानता हूं।'ईश्वर के स्वरूप का वर्णन करते हुए महर्षि पतंजलि कहते हैं––'क्लेशकर्मविपाकाशयैरपरामृष्टः पुरूषविशेष ईश्वरः। योग दर्शन 1.24 अर्थात् अविद्या, अस्मिता, राग, द्वेष और अभिनिवेश–इन पांच क्लेश, कर्मफल और वासनाओं के संसर्ग से रहित पुरूष–विशेष ईश्वर है।'यदि हम श्रीराम के जीवन को इस कसौटी पर कसें तो वे ईश्वर सिद्ध नहीं होते। वे क्लेशों से युक्त थे और उन्होंने अपने आप को फलों का भोक्ता भी स्वीकार किया है। वन में सीता को खोजते हुए दुःखी होकर विलाप करते हुए वे लक्ष्मणजी से कहते हैं–– 'पूर्वं मया नूनमभीप्सितानि पापानि कर्माण्यसकृत् कृतानि। तत्रायमद्य पतितो विपाको, दुःखेन दुःखं यदहं विशामि।। अरण्य. 63.4 अर्थात् हे लक्ष्मण ! निश्चय ही पूर्वजन्म में मैंने अनेक पाप किये थे। उसी का परिणाम है कि मुझे दुःख के पश्चात् दुःख प्राप्त हो रहे हैं।'श्रीराम प्रतिदिन सन्ध्या किया करते थे। यदि वे ईश्वर थे तो संध्या किसकी करते थे? श्रीराम का नित्य सन्ध्या एवं जप करना यह सिद्ध करता है कि वे ईश्वर नहीं थे। रामायण के सुप्रसिद्ध विद्वान आनरेबल श्रीनिवासजी शास्त्री ने भी लिखा है––"To me Shri Ram is not divine-" अर्थात् मैं श्रीराम को ईश्वर नहीं मानता। पाठक पूछ सकते हैं कि यदि श्रीराम भगवान् नहीं थे तो पुस्तक में उन्हें 'भगवान'शब्द से क्यों सम्बोधित किया गया है? इसका उत्तर है––'ऐश्वर्यस्य समग्रस्य धर्मस्य यशसः श्रियः। ज्ञानवैराग्ययोश्चौव षण्णां भग इतीरणा।। –विष्णु पुराण 6ध्5ध्74 अर्थात् ऐश्वर्य, धर्म, यश, श्री, ज्ञान और वैराग्य–इन छह का नाम भग है।'इनमें से जिसके पास एक भी हो उसे भी भगवान् कहा जा सकता है। श्रीराम के पास तो थोड़ी–बहुत मात्रा में ये सारे ही 'भग' थे। इसलिए उन्हें भगवान् कहकर सम्बोधित किया जाता है। वे भगवान् थे, ईश्वर नहीं थे, न ईश्वर के अवतार थे। वे एक महामानव थे। यदि उन्हें एक महापुरूष मानकर हम उनके जीवन का अध्ययन करें तभी हम लाभान्वित हो सकते हैं।" श्रीरामचन्द्र ने अपने पिता दशरथ के माता कैकेयी को दिए वचन व माता कैकेयी की इच्छा को शिरोधार्य कर स्वेच्छा से 14 वर्ष तक वनों में रहकर साधुओं का जीवन व्यतीत किया था। उनके वनवास का जीवन अनेक प्रसिद्ध घटनाओं से पूर्ण हैं जहां उन्होंने ऋषियों के यज्ञों की रक्षा के साथ राक्षसों का संहार कर पृथिवी को पापियों से मुक्त किया था। सुग्रीव के प्रति उनकी मित्रता और इसके लिए उसके भाई महावीर बाली का वध किया था। हनुमान जी की वेद–विद्या में निपुणता के वह प्रशंसक थे। अपने शत्रु रावण के भाई विभीषण को उन्होंने न केवल शरण व आश्रय दिया अपितु उसे रावण का वध करके लंकेश बनाया। मित्र सुग्रीव को राज्य व उसकी पत्नी को प्राप्त कराया। 14 वर्षों तक नगर से दूर रहे और कन्दमूल फल खाकर, सन्ध्या व यज्ञ का अनुष्ठान कर कठोर जीवन व्यतीत किया। उनके ऐसे कार्य सभी के लिए प्रेरणाप्रद एवं अनुकरणीय है।

आज रामनवमी के दिन रामराज्य का वर्णन कर हम लेख को विराम देंगे। महायशस्वी श्रीराम ने 14 वर्ष के वनवास की अवधि पूरी कर भूमण्डल का शासन किया। महर्षि वाल्मीकि ने रामराज्य का वर्णन करते हुए लिखा है कि श्रीराम के राज्य में स्त्रियां विधवा नहीं होती थीं, सर्पों से किसी को भय नहीं था और रोगों का आक्रमण भी नहीं होता था। रामराज्य में चारों और डाकुओं का नाम तक नहीं था। दूसरे के धन को लेने की तो बात ही क्या, कोई उसे छूता तक नहीं था। राम–राज्य में बूढ़े बालकों का मृतक–कर्म नहीं करते थे अर्थात् बालमृत्यु नहीं होती थी। राम–राज्य में सब लोग वर्णानुसार अपने धर्मकृत्यों का अनुष्ठान करने के कारण प्रसन्न रहते थे। श्रीराम उदास होंगे, यह सोच कोई किसी का दिल नहीं दुःखाता था। राम–राज्य में वृक्ष सदा पुष्पों से लदे रहते थे। वे सदा फला करते थे। उनकी डालियां विस्तृत हुआ करती थी। यथासमय वृष्टि होती थी और सुख स्पर्शी वायु चला करती थी। ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र कोई भी लोभी नहीं था। सब अपना–अपना कार्य करते हुए सन्तुष्ट रहते थे। राम–राज्य में सारी प्रजा धर्मरत और झूठ से दूर रहती थी। सब लोग शुभ लक्षणों से युक्त और धर्मपरायण होते थे। श्री राम चन्द्र जी का 51 वर्ष की आयु में राज्याभिषेक हुआ था और उन्होंने निरन्तर 30 वर्ष तक राज्य कर वेदों की परम्परा के अनुसार तप व ईश्वर का ध्यान व योगसाधना हेतु वनगमन किया था। आज उनके पावन जन्म दिवस रामनवमी पर हम सब उनके आदर्श चरित्र से प्रेरणा लेकर उनके गुणों को अपने जीवन में धारण करें, इसी में इस दिन को मनाने की सार्थकता है।

– 196 चुक्खूवाला–2, देहरादून–248001, फोनः09412985121

ओ३म्

## आर्य समाज के संन्यासियों, वानप्रस्थियों, नैष्ठिक ब्रह्मचारियों के संगठन
## वैदिक विरक्त मण्डल के तत्वावधान में

पूज्य स्वामी दिव्यानन्द जी,स्वामी आर्यवेश जी,स्वामी प्रणवानन्द जी,स्वामी धर्मेश्वरानन्द जी, स्वामी विश्वानन्द जी, स्वामी, धर्ममुनि जी, स्वामी चन्द्रवेश जी आदि के नेतृत्व में

**कन्या भ्रूण हत्या, पाखण्ड–अन्धविश्वास, नशाखोरी व अश्लीलता के विरूद्ध**

# वेद प्रचार जन चेतना यात्रा

**यज्ञ व उद्घाटनः** सोमवार, 13 अप्रैल 2015, प्रातः 8 से 10 बजे तक
**स्थानः** वैदिक मोहन आश्रम, भूपतवाला, हरिद्वार, उत्तराखण्ड
**संयोजकः** प्रि.धनीराम, स्वामी यतीश्वरानन्द (विधायक), गोविन्दसिंह भण्डारी, वीरेन्द्र पवार, प्रेमचन्द्र शर्मा
**समापन समारोहः** वीरवार, 23 अप्रैल 2015, प्रातः 10 से 1 बजे तक, गुरूकुल होशंगाबाद, मध्य प्रदेश

**यात्रा का मार्गः** 13 अप्रैल को हरिद्वार से चलकर, पातजंलि योग पीठ, भगवानपुर, गांगल,हेड़ी, रूड़की, सहारनपुर, देवबन्द, नांगल काकड़ा, मुजफ्फर नगर, शाहपुर, पलड़ी, बुड़ाना, दाहा, बरनावा, जोहड़ी, सिरसली, बड़ोली, बागपत, पाली, लोनी होते हुए गाजियाबाद तथा बुधवार, 15 अप्रैल 2015 को सांय 6 से 8 बजे तक ''आर्य समाज, राजनगर,गाजियाबाद'' में सम्मेलन व स्वागत।
संयोजकः श्रद्धानन्द शर्मा, मायाप्रकाश त्यागी, सत्यवीर चौधरी, सुनील गर्ग, प्रवीन आर्य, तेजपाल आर्य, चौ. बीर सिंह

## केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् नई दिल्ली के नेतृत्व में
## राजधानी दिल्ली में दिनांक 16 अप्रैल 2015 का स्वागत व प्रचार का विशेष कार्यक्रम

प्रातः 8 बजे संन्यास आश्रम, गाजियाबाद से शुभारम्भः
संयोजक–स्वामी सत्यवेश जी, सौरभ गुप्ता, आशीष सिंह
प्रातः 8.30 बजे, जी.टी.रोड़, वृन्दावन गार्डन, साहिबाबाद–
संयोजकः प्रमोद चौधरी, सुरेश आर्य, के.के.यादव, हीराप्रसाद शास्त्री, शिशुपाल आर्य, यज्ञवीर चौहान, डॉ. आर. के. आर्य ।
प्रातः 9 बजे, झिलमिल मैट्रो स्टेशन, शाहदराः–
संयोजकः रामकुमार सिंह, वेदप्रकाश आर्य, नरेन्द्र आर्य, सन्तोष शास्त्री, राजेन्द्र खारी, राजीव कोहली, अरूण आर्य, विमल आर्य, माधव सिंह।
प्रातः 9.20 बजे, आर्य समाज, दिलशाद गार्डनः–
संयोजकः जवाहर भाटिया, सोमदेव कथूरिया, सुरेश मुखीजा,अरूणा मुखी।
प्रातः 9.45 बजे, सूरजमल विहार चौकः
संयोजक–महेन्द्र आहूजा (उपमहापौर), यशोवीर आर्य, रविन्द्र मेहता, वीरेन्द्र जरयाल, विजयारानी शर्मा, विकास गोगिया, महेश भार्गव, संजय आर्य, सुभाष ढींगरा, सुरेन्द्र गम्भीर, शिवम मिश्रा, अमीर चन्द रखेजा।
प्रातः 10.30 बजे, आर्य समाज, पुलबंगश, आजाद मार्केट–
संयोजकः अखिलेश भारती, ओम सपरा, गोपाल जैन, कमल आर्य।
प्रातः 10.45 बजे, आर्य समाज, प्रताप नगर– संयोजकः वीरेन्द्र कुमार, केवलकृष्ण सेठी, गुलशन कुमार, ज्योति शर्मा, संजीव आर्य।
प्रातः 11.15 बजे, चौधरी मिष्ठान भण्डार, शक्ति नगर छोटा गोल चक्कर–
संयोजकः योगेश आर्य, सुधीरचन्द घई, कुंवर पाल शास्त्री
प्रातः 11.30 बजे, आर्य समाज, शक्ति नगर–
संयोजकः नरेन्द्र गुप्ता, आचार्य प्रेमपाल शास्त्री, हरिसिंह चौहान।
दोपहर 12 बजे, आर्य समाज, वजीरपुर जे.जे.कालोनी– संयोजकः भूदेव आर्य, रामहेत आर्य, वीरेश आर्य, गजेन्द्र आर्य, विक्रान्त चौधरी।
दोपहर 12.15 बजे, आर्य समाज, अशोक विहार, फेज–1, संयोजकः राममेहरसिंह, राकेश खुल्लर, जीवनलाल आर्य, संजय कपूर,देवेन्द्र भगत ।
दोपहर 12.30 बजे, बी ब्लाक, अशोक विहार–1, – संयोजकः डा.महेन्द्र नागपाल, ललित गर्ग, योगेश वर्मा, राजेन्द्र गर्ग, वैद्य इन्द्रदेव ।
दोपहर 12.45 बजे, शालीमार बाग ए एल मार्केटः
संयोजकः ममता नागपाल (पार्षद), राजेश्वर नागपाल, अमित नागपाल।
दोपहर 1.00 बजे, आर्य समाज, शालीमार बाग बी.एन.पूर्वी– संयोजकः बी.बी.तायल, भूदेव शर्मा, नरेन्द्र अरोड़ा, रविन्द्र आर्य, देवराज कालरा।
दोपहर 1.15 बजे, आर्य समाज, शालीमार बी.जे.पश्चिमी–
संयोजकः डा.ओमप्रकाश मान, अमित मान, मधुरप्रकाश आर्य ।
दोपहर 1.30 बजे, आर्य समाज, विशाखा एनक्लेव–
संयोजकः सत्यप्रकाश आर्य, डा. डी.पी.एस. वर्मा, माता कृष्णबाला, ओमप्रकाश गुप्ता, रणसिंह राणा, धर्मवीर आर्य, सतीश आर्य, सुषमा अरोड़ा।
दोपहर 1.45 बजे, आर्य समाज, प्रशान्त विहार–संयोजकः कृष्णचन्द पाहुजा, सोहनलाल मुखी, सुरेश हसीजा, अन्जु जावा, शिखा अरोड़ा ।
दोपहर 2.00 बजे, (भोजन), आर्य समाज, रोहिणी, सैक्टर–7, संयोजकः आर्य तपस्वी सुखदेव जी,शिवकुमार गुप्ता,सुरेन्द्र गुप्ता,राजीव आर्य।
दोपहर 3.00 बजे, आर्य समाज, सैनिक विहार–सुनील गुप्ता, कृष्णा सपरा, सोनल सहगल, विनोद गुप्ता, सुदेश खुराना, प्रवीण कोहली।
दोपहर 3.15 बजे, मेन बाजार रानी बाग–
संयोजकः दुर्गेश आर्य, सुरेश आर्य, जोगेन्द्र खट्टर, यज्ञदत आर्य।
दोपहर 3.45 बजे, आर्य समाज, रेलवे रोड़, रानी बाग–राजकुमार शर्मा, सोमनाथ पुरी, मैथिली शर्मा, योगेन्द्र शर्मा, अवधेश आर्य, विजय आर्य।
सायं 4.15 बजे, आर्य समाज, पूर्वी पंजाबी बाग–
संयोजकः बलदेव जिन्दल, रवि चडडा, रमेश गिरोत्रा, एस.के.कोछड़ ।
सायं 5.15 बजे,आर्य समाज,रमेश नगर– संयोजकः नरेन्द्र आर्य 'सुमन', सत्यपाल नांरग, नरेश विज, राजेन्द्र लाम्बा, डा. सुषमा शर्मा, वेद प्रकाश।
रात्री 7.30 बजे, गुरूकुल गौतम नगर, नई दिल्ली में रात्री विश्राम ।

**शुक्रवार 17 अप्रैल 2015 का कार्यक्रमः**

प्रातः 8.00 से 9.30 बजे तक, गुरूकुल गौतम नगर में यज्ञ व स्वागत समारोह द्वारा दक्षिण दिल्ली वेद प्रचार मण्डल–
संयोजकः स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती, रविदेव गुप्ता, सुभाष चांदला, विद्याभूषण गुप्ता, प्रकाशवीर शास्त्री, ओमवीर सिंह, देवदत्त आर्य।
प्रातः 10 बजे, आर्य समाज, मस्जिद मोठ–संयोजकः चतरसिंह नागर, सत्यपाल आर्य, ओमप्रकाश सैनी, देवेन्द्र कुमार, रामफल खर्ब।
प्रातः 10.15 बजे, आर्य समाज, डिफेन्स कालोनी गोल चक्कर–
संयोजकः आनन्द चौहान व अजय चौहान।
प्रातः 10.30 बजे, आर्य समाज, लाजपत नगर–2, –संयोजकः राजेश मेहन्दीरता, सुरेन्द्र शास्त्री, पं.मेघश्याम वेदालंकार, सोमनाथ कपूर ।
प्रातः 10.45 बजे, आर्य समाज, अमर कालोनीः जितेन्द्र डावर, ओमप्रकाश छाबड़ा, प्रभा ग्रोवर, अर्चना पुष्करना, स्वर्ण गंभीर ।
प्रातः 11.15 बजे, आर्य समाज, कालका जी– संयोजकः रामचन्द कपूर, रमेश गाडी, रामप्रसाद बरेजा, राकेश भटनागर, सुधीर मदान।
दोपहरः 12.00 बजे, बदरपुर बार्डर–श्यामसिंह यादव, गजेन्द्र चौहान, सुशील आर्य, रामसेवक आर्य, जितेन्द्र सिंह आर्य, वीरेन्द्र योगाचार्य।
दोपहर 12.30 से 1.30 तक, (भोजन), गुरूकुल इन्द्रप्रस्थ, सराय, फरीदाबाद– संयोजकः पी.के.मितल व आचार्य ऋषिपाल।
दोपहर 2.30 से 3.30 तक, महर्षि दयानन्द योगधाम, गली न.8, एन एच–3, एस.जी.एम.नगर, फरीदाबाद–संयोजकः जयदेव शर्मा, रामखिलावन आर्य, सुरेश गुलाटी, विमला ग्रोवर, महेश गुप्ता, सत्यभूषण आर्य, कौशल मुनि।

**रात्री 8.00 बजे, गुरूकुल दखौला, मथुरा में रात्री विश्राम**

18 अप्रैल 2015, प्रातः 10 से 1.00 बजे तक, आगरा में सम्मेलन–
संयोजकः रमाकान्त सारस्वत, सुशील विद्यार्थी, अर्जुनदेव महाजन, सत्यदेव गुप्ता, विजय अग्रवाल, डा.विद्यासागर, अरविन्द मेहता, राजकुमारी आर्या, डा. वीरेन्द्र खण्डेलवाल, हरिशंकर अग्निहोत्री।
तत्पश्चात धौलपुर, मुरेना, अम्बाह से ग्वालियर, झांसी, सागर, भोपाल होते हुए 22 अप्रैल को गुरूकुल होशंगाबाद (मध्य प्रदेश) पंहुचेगी।

**सभी आर्य जनों से अनुरोध है कि यात्रा के मार्ग में यथा सम्भव कार्यक्रम, स्वागत, भोजन व आवास आदि का सुन्दर प्रबन्ध करने व करवाने की कृपा करें।**

**अपील- दिल्ली व आसपास के आर्य युवक व आर्य बन्धु अपनी कार या मोटर साईकिल ''ओ३म्'' ध्वजों से सजाकर वीरवार, 16 अप्रैल को प्रातः 9 बजे ''झिलमिल मैट्रो स्टेशन'' भारी संख्या में पहुंचे व यात्रा में साथ चलें।**

**डॉ. अनिल आर्य**
राष्ट्रीय अध्यक्ष–9810117464

**महेन्द्र भाई**
राष्ट्रीय महामन्त्री–9013137070

**धर्मपाल आर्य**
कोषाध्यक्ष–9711523412

**E-mail:** aryayouthn@gmail.com **Website:** www.aryayuvakparishad.com
**Group:** aryayouthgroup@yahoogroups.com • join-http:// www.facebook.com/group/aryayouth

# आर्य समाज मदनगीर, नई दिल्ली का वार्षिकोत्सव सोल्लास सम्पन्न

रविवार, 29 मार्च 2015, आर्य समाज, मदनगीर, नई दिल्ली का वाषिकोत्सव सोल्लास सम्पन्न हुआ। चित्र में परिषद् अध्यक्ष डा. अनिल आर्य को सम्मानित करते सुभाष चांदला, के. एल.राणा, हरिचन्द आर्य (प्रधान,समाज), प्रि. श्यामलाल आर्य, ओमप्रकाश यर्जुवेदी, देसपालसिंह राठौर, प्रकाशवीर शास्त्री व अनन्तराम आर्य। द्वितीय चित्र–आर्य समाज मालवीय नगर के मन्त्री व समारोह अध्यक्ष सुभाष चांदला का स्वागत करते प्रकाशवीर शास्त्री, ओमप्रकाश यर्जुवेदी, चतरसिंह नागर (मण्डल महामन्त्री), हरिचन्द आर्य, डा. अनिल आर्य व देसपालसिंह राठौर। विशिष्ट अतिथि योगराज अरोड़ा, प्रि. अन्जु महरोत्रा, हरबंसलाल कोहली, बलराज सेजवाल, अनिल हाण्डा आदि भी उपस्थित थे। कुशल संचालन आशु कवि विजय गुप्त ने किया।

# योगधाम फरीदाबाद व आर्य समाज सफदरजंग एनक्लेव का उत्सव सम्पन्न

शनिवार, 28 मार्च 2015, महर्षि दयानन्द योगधाम, फरीदाबाद का वाषिकोत्सव सोल्लास सम्पन्न हुआ। मंच पर स्वामी दिव्यानन्द जी, डा. अनिल आर्य, नन्दलाल कालरा आदि। कुशल संचालन मंत्री रामखिलावन आर्य ने किया। जयदेव शर्मा, डा.सत्यदेव गुप्ता, जितेन्द्रसिंह आर्य, सुरेश गुलाटी, प्रेम बहल आदि भी उपस्थित थे। रविवार, 29 मार्च 2015, आर्य समाज, सफदरजंग एनक्लेव, नई दिल्ली में रामनवमी पर्व सोल्लास मनाया गया। आचार्य वेदप्रकाश श्रोत्रिय का ओजस्वी उद्बोधन हुआ। चित्र में डा. महेश विद्यालंकार को स्मृति चिन्ह भेंट करते रविदेव गुप्ता (प्रधान,समाज), डा. अनिल आर्य, स्वदेशपाल शर्मा,रामबाबु गुप्ता।

# आर्य समाज शाहबाद मुहम्मदपुर व कालका जी का उत्सव सम्पन्न

रविवार, 29 मार्च 2015, आर्य समाज शाहबाद मुहम्मदपुर, नई दिल्ली में नवसम्वत् का कार्यकम सोल्लास मनाया गया। आर्य युवकों को सम्बोधित करते डा. अनिल आर्य, साथ में मन्त्री डा.मुकेश सुधीर व सौरभ गुप्ता। द्वितीय चित्र–रविवार, 29 मार्च 2015, आर्य समाज कालका जी, नई दिल्ली में रामनवमी पर्व मनाया गया। चित्र में डा. सेवक जगवानी, डा. सुधीर आर्य को स्मृति चिन्ह भेंट करते डा.अनिल आर्य, प्रधान रमेश गाडी, मंत्री राकेश भटनागर, संरक्षक रामचन्द कपूर व कोषाध्यक्ष सुधीर मदान।

# आर्य समाज भलस्वा व नरेला का उत्सव सोल्लास सम्पन्न

रविवार, 22 मार्च 2015, आर्य समाज, भलस्वा, दिल्ली का उत्सव सोल्लास सम्पन्न हुआ। चित्र में नन्दलाल शास्त्री का सपत्निक स्वागत करते रणसिंह राणा, डा. अनिल आर्य, हर्षा आर्या, सुरेन्द्र गुप्ता, अजीत यादव (पार्षद)। द्वितीय चित्र–रविवार, 22 मार्च 2015, आर्य समाज, नरेला, दिल्ली का वार्षिकोत्सव सोल्लास मनाया गया। चित्र में प्रधान राजपाल आर्य व प्रो. बलजीतसिंह आर्य (बढ़ौत) को सम्मानित करते डा.अनिल आर्य, हेमराज बसंल, वीरेन्द्र शास्त्री आदि।

## गुरूकुल खेड़ाखुर्द का उत्सव 12 अप्रैल को

दिल्ली के सुप्रसिद्व गुरूकुल, खेड़ाखुर्द, दिल्ली के 70 वें वार्षिकोत्सव पर ऋग्वेद पारायण यज्ञ 1 अप्रैल से 11 अप्रैल 2015 तक प्रातः 7 से 9 तक व सायं 5.30 से 7 बजे तक होगा। समापन समारोह रविवार, 12 अप्रैल 2015 को प्रातः 8 बजे से दोपहर 1.30 बजे तक होगा। आप सभी सादर आमन्त्रित हैं। गुरूकुल में कक्षा 6, 7, 8 में प्रवेश पारम्भ है, शीघ्र सम्पर्क करें। फोनः 8800443826

ब्रह्मप्रकाश मान (प्रधान) जोगेन्द्र मान (मन्त्री) आचार्य सुधांशु (प्राचार्य)

## आर्य कन्या शिविर दिल्ली में

केन्द्रीय आर्य युवती परिषद् के तत्वावधान में ''आर्य कन्या चरित्र निर्माण शिविर'' रविवार, 17 मई से 24 मई 2015 तक आर्य समाज, रमेश नगर, नई दिल्ली में लगेगा। सम्पर्क करें– उर्मिला आर्या(अध्यक्षा)– 9711161843, अर्चना पुष्करना (महामन्त्री)– 09899555280– अनिता कुमार (संयोजक) – 9212645522.

## आर्ष कन्या गुरूकुल हजारीबाग में प्रवेश प्रारम्भ

आर्य समाज, हजारी बाग, झारखण्ड द्वारा संचालित ''आर्ष कन्या गुरूकुल'' में 1 मई से 15 मई 2015 तक प्रवेश प्रारम्भ होगा। प्रवेशार्थ कन्यायें 9 वर्ष से 12 वर्ष तक हों। सम्पर्क करें– आचार्य कृष्णप्रसाद कौटिल्य–06546–263706,09430309525

## शोक समाचार: विनम्र श्रद्धांजलि

1. श्री रामप्यारा आनन्द (पूर्व मंत्री, आर्य समाज, त्रिनगर) का निधन।
2. श्री सुभाष भाटिया (फरीदाबाद) का निधन।
3. श्रीमती विठ्ठनदेवी (माता श्री गजेन्द्र चौहान) का निधन।
4. श्रीमती सन्तोष गुप्ता (सासु मां श्री रजनीश गोयनका) का निधन।
5. श्री मोहन लाल गोसांई (बी.एच.पी.) का निधन।

**(केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् की ओर से विनम्र श्रद्धांजलि।**

सम्पादक: **अनिल कुमार आर्य** द्वारा केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के लिए **मंयक प्रिंटर्स**,2199/63, नाईवाला, करोलबाग, दिल्ली-5 दूरभाष : 41548503 मो. : 9810580474 से मुद्रित व परिषद् कार्यालय आर्य समाज टी-176-177, कबीर बस्ती, दिल्ली-7 से प्रकाशित, **प्रबन्धक** : दिनेश आर्य, मोबाइल : 9911587765, देवेन्द्र भगत, मोबाइल : 09958889970